मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 5

MHD–004

कला परास्नातक (हिंदी)

(एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.एच.डी–004 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×12=36

(क) अन्धाधुन्ध मच्यौ सब देसा
मानहुँ राजा रहत बिदेसा
गो द्विज श्रुति आदर नहिं होई
मानहुँ नृपति विधर्मी होई
ऊँच नीच सब एकहि सारा
मानहुँ ब्रह्मज्ञान विस्तारा।

(ब) देश की दुर्दशा निहारोगे, डूबते को कभी उबारोगे ?

हारते ही रहे, न है कुछ अब, दाँव पर आपको न हारोगे।

कुछ करोगे कि बस सदा रोकर, दीन हो दैव को पुकारोगे।

सो रहे तुम, न भाग्य सोता है, आप बिगड़ी तुम्हीं सवाँरोगे।

दीन जीवन बिता रहे अब तक, क्या हुआ जा रहे, विचारोगे ?

(ग) तुम्हारे लिए जीने का मतलब रहा है—कितना कुछ एक साथ होकर, कितना कुछ एक साथ पाकर और कितना कुछ एक साथ ओढ़कर जीना। वह उतना कुछ कभी तुम्हें किसी एक जगह न मिल पाता, इसलिए जिस किसी के साथ भी जिन्दगी शुरू करतीं तुम हमेशा इतनी ही खाली, इतनी ही बेचैन बनी रहतीं।

(घ) रघुवीर सहाय ने लिखा है, 'मेरे मन में पानी के कई संस्मरण हैं।' निराला के काव्य को अजस्र निर्झर मानकर मैं भी कह सकता हूँ कि "मेरे मन में पानी के अनेक संस्मरण हैं"—अजस्र बहते पानी के, फिर वह बहना चाहे मूसलाधार वृष्टि का हो, चाहे धुआँधार जल-प्रपात का, चाहे पहाड़ी नदी का, क्योंकि निराला जब कविता पढ़ते थे, तब वह ऐसी ही वेगवती धारा सी बहती थी। किसी रोक की कल्पना भी तब नहीं की जा सकती थी—सरोवर-सा ठहराह उनके वाचन में अकल्पनीय था।

(ङ) 'दुनिया में त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, परमार्थ नहीं है—है केवल प्रचण्ड स्वार्थ।' इस स्वार्थ के साथ ही वे जिजीविषा अर्थात् 'जीने की इच्छा' की भी विशद चर्चा करते हैं। भीतर की जिजीविषा—जीते रहने की प्रचण्ड इच्छा—ही अगर बड़ी बात है, तो फिर यह सारी बड़ी-बड़ी बोलियाँ, जिनके बल पर दल बनाए जाते हैं, शत्रुमर्दन का अभिनय किया जाता है, देशोद्धार का नारा लगाया जाता है, साहित्य और कला की महिमा गायी जाती है, झूठ हैं।

2. 'स्कंदगुप्त' नाटक की चरित्र–योजना का विवेचन कीजिए। 16

3. मोहन राकेश की नाट्य–शैली पर अपने विचार प्रकट कीजिए। 16

4. प्रतापनारायण मिश्र की प्रमुख रचनाओं का परिचय देते हुए उनके निबंधों की विशेषताएँ बताइए। 16

5. 'ताँबे के कीड़े' की कथावस्तु को संक्षेप में बताते हुए उसकी प्रतीक–योजना को स्पष्ट कीजिए। 16

6. 'अंधायुग' नाटक की अभिनेयता पर विचार कीजिए। 16

7. 'संस्कृति और जातीयता' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए। 16

8. राहुल सांकृत्यायन के यात्रा–वृत्रान्त 'किन्नर देश की ओर' की विषयवस्तु का विश्लेषण कीजिए। 16

9. 'लोभ और प्रीति' निबंध की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए। 16

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिएँ :

$2 \times 8 = 16$

(क) 'अंधेर नगरी' की मूल संवेदना।

(ख) 'आधे-अधूरे' में अभिव्यक्त स्त्री-पुरुष संबंध।

(ग) 'स्कन्दगुप्त' का नाट्य-शिल्प।

(घ) 'कुटज' की अंतर्वस्तु।

× × × × ×